'आरएफसी' को अपना 'बास' नहीं मानते 'डिप्टी आरएमओ'!

आरएफसी लिखते रह जाते हैं, मगर डिप्टी आरएमओ सुनते ही नहीं, यह लोग आरएफसी के पत्रों का जबाव तक नहीं देते और न यह इन्हें समय ही देते

⏩ आरएफसी ने मंडल के तीनों डिप्टी आरएमओ को 65 पत्र लिखा, लेकिन न तो एक भी पत्र का जबाव दिया और न कार्रवाई ही किया ⏩ सवाल उठ रहा है, कि जब केंद्र प्रभारी धान खरीदने के लिए सेंटर पर ही नहीं गए तो करोड़ों रुपये की धान किसने खरीदा ⏩ जब शासन ने इनके पावर को बढ़ा दिया, तब से यह आरएफसी को इग्नोर करने लगे

तेजयुग न्यूज

बस्ती।...सुनने में अजीब लग रहा होगा, मगर यह सच है, कि मंडलीय अधिकारी यानि आरएफसी को उनके जूनियर डिप्टी आरएमओ उन्हें अपना बास ही नहीं मानते। आरएफसी पत्र लिखते रह जाते हैं, मगर यह लोग जबाव देना मुनासिब नहीं समझते है। कार्रवाई करना तो दूर की बात है।

कुछ समय पहले तक यही डिप्टी आरएमओ, आरएफसी के आगे पीछे घूमते थे, मगर जब से शासन ने डिप्टी आरएमओ के पावर को बढ़ा दिया है, तब से यह आरएफसी से मिलना कौन कहे, उनके साथ बैठना और वार्ता करना भी अपनी तौहीन मानते/समझते है। अब जरा अंदाजा लगाइए कि आरएफसी, तीनों जिलों के डिप्टी आरएमओ को 65 पत्र लिख चुके हैं, लेकिन एक भी डिप्टी आरएमओ ने एक भी पत्र का जबाव नहीं दिया। धान खरीद के दिन से और खरीद के अंत तक आरएफसी लिखते रहे हैं, कि केंद्र प्रभारी सेंटर पर नहीं जा रहे हैं, उनके खिलाफ कार्रवाई कर तीन दिन में अवगत कराया जाए, तीन की बात तो छोड़िए, चार माह बीत गए, एक भी पत्र का न तो जबाव दिया, और न गैरहाजिर रहने वाले केंद्र प्रभारियों के खिलाफ ही कोई कार्रवाई किया।

अब सबसे बड़ा सवाल यह उठ रहा है, कि 'लाइव लोकेषन' में जब धान खरीद करने वाले प्रभारी सेंटर पर गए ही नहीं तो फिर किसने अरबों करोड़ों रुपये का धान खरीदा और भुगतान किया? इससे पता चलता कि अधिकांष धान खरीद कागजों में की गई, और उस खरीद में डिप्टी आरएमओ बराबर के हिस्सेदार रहें। इतना ही नहीं आरएफसी ने डीआर और पीसीएफ के मंडलीय अधिकारी को भी लिखा कि जो केंद्र प्रभारी निरंतर गैर हाजिर रह रहे हैं, उनके खिलाफ कार्रवाई करें, मगर इन लोगों ने भी कोई कार्रवाई नहीं किया, चूंकि कार्रवाई एआर और पीसीएफ के डीएस को करनी होती है, इस लिए आरएफसी लिखकर ही रह गए। कहने का मतलब अगर देखा जाए तो फर्जी धान की खरीद में डिप्टी आरएमओ, एआर और पीसीएफ के डीएस पूरी तरह जिम्मेदार है।

तेजयुग फॉलोअप खबर

कहना गलत नहीं होगा कि इन तीनों की देखरेख में करोड़ों रुपये के फर्जी धान की खरीद हुई। चूंकि इन तीनों की सहमति/मेहरबानी से ही केंद्र प्रभारी नियुक्ति हुए हैं, इस लिए इन तीनों को कार्रवाई करने में तकलीफ हो रही है। जब से षासन ने आरएफसी को 'पावरलेस' किया, और डिप्टी आरएमओ को 'पावरफुल' बनाया, तभी से फर्जी धान/गेहूं खरीद में तेजी आई। अब तो कोई डिप्टी आरएमओ, आरएमओ या फिर आरएफसी बनना नहीं चाहता। इसी तरह एआर, डीआर और पीसीएफ के डीएस मंडलीय अधिकारी के पद का प्रमोषन नहीं चाहते है। आर्थिक रुप से डिप्टी आरएमओ, एआर और डीएस इतने मजबूत हो चुके है, कि वह किसी भी समय आरएफसी, डीआर और पीसीएफ के मंडलीय अधिकारी को हटाने की क्षमता रखते है।

शासन ने आरएफसी को डाकिया बनाकर रख दिया, इनका काम सिर्फ पत्राचार करना ही रह गया, अब यह किसी एमआई के खिलाफ न तो कोई कार्रवाई कर सकते है, और न ही डिप्टी आरएमओ के खिलाफ कार्रवाई के लिए लिख ही सकते है। यहां तक करोड़ों रुपये का सीएमआर हजम करने वाले चावल मिलर्स के खिलाफ भी कोई कार्रवाई नहीं कर सकते है। षासन ने कार्रवाई करने का अधिकार आरएफसी से छीनकर डिप्टी आरएमओ को दे दिया, जिस आरएफसी के चेंबर में कभी लाइन लगी रहती है, आज उस चेंबर में विपणन निरीक्षक तक जाना पसंद नहीं करते, डिप्टी आरएमओ की तो बात ही छोड़िए। एक तरह से डिप्टी आरएमओ तानाशाह की भूमिका निभा रहे है। इसी तानाशाही के चलते करोड़ों रुपये के सीएमआर हर साल गबन होता जा रहा है, अब तक 47 करोड़ का सीएमआर राइस मिलर्स के द्वारा गबन किया जा चुका है, और आगे कितना होगा, इसे कहा नहीं जा सकता है, क्यों कि सीएमआर को लेकर जो लापरवाही बरती जा रही है, और फर्जी धान की रिसीव मिलों से कराई जा रही है, उसे देखते हुए 23-24 में भी करोड़ों रुपये का सीएमआर के गबन होने की संभावना जताई जा रही है। पहले इन सभी पर आरएफसी के द्वारा नियंत्रण रखा जाता था, मगर, जब से शासन ने आरएफसी को डाकिया बनाया तब से धान/गेहूं खरीद योजना नियंत्रणविहीन हो गया।

'तीन किमी.' दौड़ाकर 'मुन्ना भाई' को 'पकड़ा'

पकड़ने वाले शिक्षक रत्नेश चौधरी को साल्वर ने मारा-पीटा, पेशाब करने के बहाने भागा साल्वर

❖ केंद्र व्यवस्थापक चंद्रेश चौधरी, सहायक व्यवस्थापक अतुल कुमार सिंह और स्टैटिक मजिस्टेट अतुल कुमार की सोचबूझ से पकड़ा गया साल्वर ❖ स्व. द्वारिका चौधरी इंटर कालेज चौबाह लालगंज का मामला ❖ भौतिक विज्ञान के परीक्षा के दौरान फर्जी परीक्षार्थी मुकेश पकड़ा गया

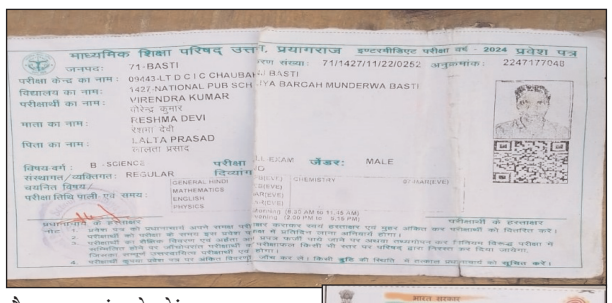

तेजयुग न्यूज

बस्ती।...आज भी मुन्ना भईयों की कमी नहीं है। सरकार की सख्ती के बाद भी फर्जी परीक्षार्थी पकड़े जा रहे हैं, जबकि इन्हें मालूम हैं, कि अगर पकड़े गए तो जेल जाना ही पड़ेगा। पहली बार मुकेश पुत्र पंचम नामक फर्जी परीक्षार्थी को तीन किमी. दौड़ाकर पकड़ने का रिकार्ड स्व. द्वारिका चैधरी इंटर कालेज

चैबाह लालगंज के केंद व्यवस्थापक चंद्रेश चौधारी, शिक्षक रत्नेश चैधरी और गार्ड ने पकड़ा।

पकड़े जाने के बाद भी मुन्ना भाई ने रत्नेष को मारा-पीटा फिर भी रत्नेष ने उसे नहीं छोड़ा। मुन्ना भाई खेत-खेत और मेढ़-मेढ़ दौड़ता रहा, फिर भी नहीं बच पाया। अगर केंद्र व्यवस्थापक चंद्रेश चैधरी, सहायक व्यवस्थापक अतुल कुमार सिंह और स्टैटिक मजिस्टेट अतुल कुमार सतर्क नहीं रहते तो साल्वर नहीं पकड़ा जाता। इस विद्यालय में द्वितीय पारी में इंटर का भौतिक विज्ञान का परीक्षा चल रहा था। जिस छात्र के स्थान पर मुकेष परीक्षा दे रहा था, उसका नाम वीरेंद्र कुमार पुत्र लालता है, और वह नेषनल इंटर कालेज तुरकौलिया बरगाह का छात्र है।

प्रधानाचार्य/केंद्र व्यवस्थापक चंद्रेश चैधरी की ओर से इस मामले में लालगंज थाने में एफआइआर दर्ज कराने के लिए तहरीर दिया है। तहरीर में कहा गया कि अनुक्रमांक संख्या 22717098 के स्थान पर फर्जी परीक्षार्थी मुकेश पुत्र पंचम निवासी बहेरिया, वाल्टरगंज परीक्षा देते पकड़ा गया, यह चकमा देकर विधालय के गेट से बाहर भागा। जिसे कक्ष निरीक्षक रत्नेश कुमार पुत्र राम मिलन बारीघाट, लालगंज ने दौड़ाकर पकड़ा। यह घटना चार मार्च 24 को दिन में दो बजकर 50 मिनट पर हुई। जिस तरह मुन्ना भाई को दौड़ाकर पकड़ा उसके लिए उन्हें बधाई दी जा रही है, वरना कौन किसके पीछे खेत-खेत और मेढ़-मेढ़ भागता वह भी तीन किमी. तक और मार खाता। डीआईओएस कार्यालय से सूचना मिली थी, कि कोई मुन्ना भाई परीक्षा दे रहा है। जैसे ही वह पकड़ में, पेषाब करने का बहाना बना करन भागने का प्रयास किया, गेट के बाहर भागने में सफल भी हो गया, मगर अधिक नहीं भाग पाया, अंत में रत्नेष ने उसे पकड़ ही लिया।

महिला फुटबॉल टीम ने बेगूसराय को 3 गोल से पराजित किया

बेतिया/नरकटियागंज: पश्चिम चम्पारण जिला के नरकटियागंज प्रखण्ड अंतर्गत स्व.सिंहेश्वर प्रसाद वर्मा स्टेडियम नोनिया टोला में महिला फुटबॉल टूनामेंट सम्पन्न हुआ। महिला फुटबॉल प्रतियोगिता के फाइनल मैच में टाउन क्लब नरकटियागंज और महिला फुटबॉल टीम बेगुसराय की भिड़ंत हुई। जिसमें नरकटियागंज की टीम ने बेगूसराय को शून्य के मुकाबले 3 गोल से पराजित किया। भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ट बिहार सरकार के समृद्धि वर्मा ने टाउन क्लब के अध्यक्ष वर्मा प्रसाद को अंग वस्त्र से सम्मानित किया। फाइनल मैच में टाउन क्लब ने बेगुसराय को 3-0 से पराजित कर कप पर कब्जा बरकरार रखा। विजेता कप मुख्य अतिथि समृद्ध वर्मा और विशिष्ट अतिथि वर्मा प्रसाद ने विजेता टीम के कप्तान को सौंपा। इस अवसर पर प्रमुख प्रतिनिधि चंदन कुमार, जितेंद्र राव, और राहुल जायसवाल मुखिया शिकारपुर उपस्थित रहे।

'थानों' में 'मुंशीगिरी' कर 'पेट' पाल रहें 'पत्रकार'

मेहनताना अगर अधिक मिल गया तो धारा भी बढ़वा देने की गारंटी लेते

❖ गौर, पैकोलिया और सोनहा थाने में तीन बड़े अखबारों के पत्रकार पीड़ितों की तहरीर से लेकर एफआईआर दर्ज कराने का काम कर रहें ❖ सुबह होते ही यह पत्रकार सादा कागज और लिखने वाला पैड लेकर पहुंच जाते ❖ जैसे ही कोई मारपीट, जमीनी विवाद या फिर जमीन की पैमाईश को लेकर हुए दो पक्षों में मारपीट होने के बाद एफआईआर लिखवाने के लिए थाने पहुंचता, वैसे ही पत्रकारगण लोग उसे घेर लेते ❖ कहते हैं, कि मेरे लिखे गए आवदेन पर ही पुलिस मुकदमा लिखेगी, पुलिस भी मारे डर के मुकदमा दर्ज कर देती ❖ एक-एक तहरीर लिखवाई और मुकदमा दर्ज करवाई पांच से हजार तक मेहनताना लेते

तेजयुग न्यूज

बस्ती।...खासतौर से जिले के बड़े कहे जाने वाले अखबारों के कुछ पत्रकारों की आर्थिक स्थित इतनी खराब हैं, कि उन्हें थानों पर मुंषीगिरी करके परिवार का भरण-पोषण करना पड़ रहा है। इसे पत्रकारों की मजबूरी कहा जाए या फिर इनका लालची स्वाभाव, बदनामी तो अखबार के साथ-साथ पूरे पत्रकार बिरादरी की हो रही है। सवाल उठ रहा है, कि अगर बड़े अखबारों के रिपोर्टरों की ऐसा हालत है, तो उन पत्रकार साथियों की कैसी होगी, जो इन बड़े पत्रकारों के सामने अपने आप को छोटा समझते है।

गौर, पैकोलिया और सोनहा थाने से बराबर यह शिकायतें आ रही है, कि इन थानों पर बड़े अखबारों के रिपोर्टर सुबह ही सादे कागज का बंडल और लिखने वाला पैड लेकर कोई चाय की दुकान तो कोई फोटो कापी करने वाले दुकान पर पहुंच जाते है, कोई कागज थमाता है, तो कोई लिखने वाला पैड देता। जैसे ही कोई मारपीट या जमीनी विवाद सहित अन्य मामले को लेकर रिपोर्ट लिखाने आता है, वैसे ही यह लोग थाने के बाहर उसे लपक लेते हैं, और कहते हैं, कि पुलिस वही एफआईआर दर्ज करेगी, जो वह लोग लिखकर देंगे, पत्रकार साहब लोग न सिर्फ पीड़ितों की तहरीर लिखते हैं, बल्कि उनका मुकदमा भी दर्ज करवाने में मदद करते हैं, और अगर किसी को धारा बढ़वाना होता है, तो उसकी फीस उन्हें अलग से देनी पड़ती है। इन लोगों की फीस एक तहरीर लिखने और मुकदमा दर्ज कराने में पांच सौ लेकर एक हजार तक होता है। धारा के हिसाब से मेहनताना देना पड़ता। पुलिस भी मारे डर के पत्रकार साहबों की लिखी तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर देती हैं, नहीं तो यही पत्रकार साहब लोग दूसरे दिन थाने के खिलाफ ही लिखना शुरु कर देते हैं। एक थाने के एसओ ने तो पत्रकारों की इस हरकत की शिकायत एसपी तक से करते हुए किसी अन्य थाने में तबादला करने की सिफारिश तक कर डाली। 'बखरा' को लेकर इन पत्रकारों में इतनी एकता और ईमानदारी होती हैं, कि अगर किसी दिन इन्हें सिर्फ पांच सौ मिला तो वह उसमें बराबर का 'बखरा' लेते है।

देखा गया है, कि अधिकांष पीड़ित बिना किसी तहरीर के वह थाने पर जाता है, वैसे भी नियमानुसार अगर कोई पीड़ित लिखना पढ़ना नहीं जानता तो पुलिस उसकी मदद करती है। इन्हीं लोगों की सेवा पत्रकार साहब लोग करते हैं, और उसी का मेहनताना भी लेते है। कहने का मतलब थाने का काम पत्रकार साहब लोग कर रहें है। अगर, इन तीनों थानों की जांच हो जाए तो तहरीर से पता चल जाएगा, कि इनकी तहरीर किसके द्वारा लिखी गई। आए दिन पत्रकारों को लेकर शिकायतें मिलती रहती है। कहना गलत नहीं होगा, कि कुछ पत्रकारों ने अपने स्तर को इतना गिरा दिया है, कि लोग उन्हें पत्रकार कहना ही बंद कर दिया।

इसके लिए पत्रकारों को कम और उन संस्थानों को अधिक जिम्मेदार माना जा रहा है, जो इनका शोषण करते है। जाहिर सी बात हैं, पत्रकार चाहें छोटा हो या बड़ा, उसकी भी जरुरतें होती है। यह अलग बात हैं, कि आज भी बहुत ऐसे पत्रकार हैं, जो अपनी वसूलों से समझौता नहीं करते। जब तक पत्रकार साथी तहसीलों, ब्लॉकों और थानों से अलग होकर पत्रकारिता नहीं करेगें तब तक उन पर और पूरी पत्रकार बिरादरी पर आरोप लगता रहेगा।

शासनादेश के खिलाफ शिक्षक लामबंद, सौंपा ज्ञापन

तेजयुग न्यूज

नसीराबाद/रायबरेली : ब्लॉक छतोंह के अंतर्गत सोमवार को प्राथमिक शिक्षक संघ अध्यक्ष आदित्य नारायण पांडेय के नेतृत्व में शिक्षक विरोध प्रदर्शन पर उतर आए और नारेबाजी के साथ ज्ञापन सौंपा।

बताया जाता है कि कुछ दिनों पहले सरकार ने शिक्षकों की मनमानी पर रोक लगाने के लिए एक शासनादेश जारी किया था जिसमें योजना बनाते हुए टैबलेट स्कीम के तहत आदेश पारित किया गया था। जो शिक्षकों के लिए गले का फांस गया है इसके तहत अब शिक्षकों को विद्यालय आना पड़ेगा।

इसी आदेश के विरोध में सोमवार को शिक्षक संघ अध्यक्ष के नेतृत्व में सभी शिक्षकों ने छतोह खंड शिक्षा अधिकारी को आदेश के विरोध में ज्ञापन दिया है। आदेश के मुताबिक बेसिक शिक्षा परिषदीय विद्यालयों को विभाग द्वारा उपलब्ध कराये गये टैबलेट के माध्यम से विद्यालय में छात्रों की उपस्थिति भोजन की सूचना और अध्यापक जिस विद्यालय में पढ़ाते हैं समय से पहुंचकर विद्यालय के सामने खड़ा होकर सेल्फी लेकर ऑनलाइन पोस्ट करें। इस मौके पर गिरजेश सिंह ब्लॉक अध्यक्ष पूर्व माध्यमिक संघ छतोह, अरविंद मिश्रा, अशफाक अहमद, कृष्ण कुमार,राकेश कुमार, सुनील कुमार निर्मल,शिव

कुमार निर्मल, मुकेश कुमार सिंह,अजय प्रताप सिंह, जय करन, अनूप मिश्रा, ब्रह्म प्रकाश, विनय कुमार, प्रमोद आदि लोग मौजूद रहे।

'बुद्धम', 'शरणम', 'गच्छामि' की जगह 'मोदी' 'शरणम' 'गच्छामि'

भगवान तेरा सहारा की जगह मोदी तेरा सहारा चरित्रार्थ हो रहा

❖ मंडल के तीनों सांसदों पर पार्टी का तो मोहर लग चुका, जनता का लगना बाकी ❖ आम लोगों का भाव तीनों के प्रति नकारात्मक, पर भाजपा के शीर्ष नेतृत्व का भाव सकारात्मक ❖ भगवान तेरा सहारा की जगह मोदी तेरा सहारा चरित्रार्थ हो रहा ❖ पांच साल तक कुछ भी करो, अंत में बुद्धम शरणमः, गच्छामि की जगह मोदी शरणमः गच्छामिः हो गया ❖ दरबारी व रागदरबारी चारण और घाटों के बीच में आज देश की राजनीति हो गई ❖ माहौल बाई दी मोदी, फार दी मोदी और आफ दी मोदी, यानि मोदी द्वारा, मोदी के लिए और मोदी का

तेजयुग न्यूज

बस्ती।...लोकसभा चुनाव में भाजपा ने पूर्वांचल में उम्मीदवारों की घोषणा कर दी। जिसकी सभी को इसकी प्रतीक्षा थी। प्रतीक्षा तो यह भी थी, कि षायद कोई बदलाव हो। मगर, पूर्वांचल की सभी सीटों को दुबारा देकर, पार्टी ने तो सांसदों के कार्यो पर मोहर लगा दिया, लेकिन अभी जनता का मोहर लगना बाकी है। जिस तरह से साल भर सभी सीटों पर उठक-पटक चल रहा था, उससे यह लग रहा था, कि कोई बदला जाएगा तो कोई रोका जाएगा। पर, हुआ इसके विपरीत, अब तो स्थित 'डैमेज कंटोल' सबसे बड़ी समस्या है, मंडल के तीनों सीटों पर कथित रुप से डैमेज है। इससे इंकार नहीं किया जा सकता है। दुभार्ग्य यह है, कि तीनों सांसदों के प्रति आम लोगों का भाव नकारात्मक हैं, पर पार्टी के शीर्ष नेतृत्व का भाव सकारात्मक।

भोजपुरी में वह कहावत, यहां पर सटीक बैठता है, कि 'सैंया भए कोतवाल तो डर काहे का' इससे अच्छा और क्या होगा कि 'भगवान तेरा सहारा' की जगह, अब 'मोदी तेरा सहारा' चरित्रार्थ हो रहा है। पांच साल तक कुछ भी करो, अंत में 'बुद्धम, शरणम, गच्छामि' की जगह 'मोदी शरणम गच्छामि' हो गया। दरबारी और रागदरबारी चारण और घाटों के बीच में आज देष की राजनीति, चाहें पक्ष हो या फिर चाहें विपक्ष हो, पिस रही हैं, पर 'पिसान' तो सत्ता पक्ष को ही मिलेगा। जिस तरह टाउन एरिया और प्रमुखों में किसी के अधिकारों का हनन कर अपात्र को पात्र बनाकर सत्ता का शीर्ष प्रसन्न हैं, हो सकता है, कि उसकी भी जबावदेही आने वाले चुनाव में देनी पड़े। बहरहाल, माहौल तो 'बाई दी मोदी, फार दी मोदी और आफ दी मोदी' हो गया, यानि मोदी द्वारा, मोदी के लिए और मोदी का। माहौल बिलकुल बोम-बोम हैं, पर विपक्ष के पास जंगल में रोने के लिए कुछ भी नहीं है, पर भाग्य किसके पक्ष में परिणाम लाता है, यह तो समय ही बताएगा। वैसे सांसद हरीष द्विवेदी और उनके समर्थक पूरी तरह आश्वक्त हैं, कि चुनाव का परिणाम हर हाल में सांसद के पक्ष में आने वाला है। अगर डैमेज कंटोल हो गया तो जीत का अंतर अधिक होने की संभावना है, और अगर नहीं हुआ तो अंतर कम भी हो सकता है, पर यह भी हो सकता है, कि परिणाम सकारात्मक न हो, क्यों कि पार्टी और सांसद को न सिर्फ विपक्ष के तीन विधायकों और राजनीति के धुरंधर रामप्रसाद चौधरी का सामना करना पड़ेगा, बल्कि सबसे अधिक इन्हें अपने लोगों से दो-चार होना पड़ेगा।

इन लोगों का जख्म इतना गहरा है, कि कोई भी दवा काम नहीं करेगी, यह सच जितना जल्दी पार्टी और सांसदजी से समझ ले, उतना अधिक दोनों के लिए अच्छा होगा। मीडिया बार-बार इस बात को चेताती आ रही है, कि सांसद हरीश द्विवेदी के रास्तें में अगर कोई बड़ा बाधक है, तो वह अपने ही है। कहा भी जाता है, कि पार्टी और प्रत्याशी विपक्ष से लड़ने की रणनीति तो बनाता है, पर पक्ष से नहीं। लेकिन यहां पर तो सांसद और पार्टी को सबसे अधिक खतरा अपनों के भीतरघात करने वालों से है। जितना विधानसभा चुनाव में भीतरघात हुआ था, और जिसके चलते भाजपा के चार विधायकों को अपनी सीट गवांनी पड़ी थी, उससे अधिक भीतरघात लोकसभा चुनाव में होने की संभावना जताई जा रही हैं, यह बात किसी से छिपी नहीं रह गई हैं, यही एक ऐसा पहलू हैं, जिसे सांसद और पार्टी को चिंतित कर रही होगी।

एनटीपीसी में मनाया गया 53वां राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस

तेजयुग न्यूज

ऊंचाहार/रायबरेली : सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति समर्पित रहते हुए कार्यविधियों का यथाशक्ति अनुपालन तथा लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रेरणादायी अभिवृत्तियों की तरफ उन्मुख होकर सम्पूर्ण सुरक्षा के साथ हमें अपने दैनिक कार्य को संपादित करना है। इस संकल्प को केन्द्र में रखकर एनटीपीसी ऊंचाहार में मुख्य महाप्रबंधक मनदीप सिंह छाबड़ा ने उपस्थित जनसमूहों को सुरक्षा शपथ दिलाई तथा अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि दुर्घटनाएं और व्यावसायिक बीमारियां राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को दुर्बल बनाती हैं तथा व्यक्ति, समाज एवं उद्योग के लिए हानिकारक होती हैं। श्री छाबड़ा ने कहा कि एनटीपीसी में बहुत ही उत्कृष्ट सुरक्षा कार्य नीति है। हम सभी को उसी सुरक्षा नीति के तहत अपने-अपने कार्यक्षेत्र में कार्य करना है क्योंकि जीवन अनमोल है।

एनटीपीसी ऊंचाहार राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस समारोह बहुत ही आकर्षक रूप में मनाया गया। सबसे पहले परियोजना परिसर में प्रभात फेरी निकाली गई, जिसका नेतृत्व मुख्य महाप्रबंधक ने सभी महाप्रबंधकों सहित किया। सुरक्षा जागरूकता को विस्तार देने के लिए नुक्कड़ नाटक तथा अन्य प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। उल्लेखनीय है कि सुरक्षा विभाग द्वारा एक सप्ताह तक विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे पोस्टर, निबंध-नारा लेखन व प्रश्नोत्तरी आदि का आयोजन किया गया, जिनमें कर्मचारियों व उनके परिवारों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इसके अलावा मुख्य समारोह में संविदा श्रमिकों द्वारा नुक्कड़ नाटक के माध्यम से सुरक्षा के प्रति जागरूकता का शानदार प्रदर्शन किया गया। सभी प्रतियोगियों तथा कलाकारों को इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया। इसके अलावा कॉन्ट्रैक्ट लेबर एप्रिसेशन अवार्ड प्रोग्राम (क्लैप) के तहत संविदा कर्मियों को भी पुरस्कृत किया गया।

समारोह में महाप्रबंधक (ईंधन प्रबंधन) के डी यादव, महाप्रबंधक (प्रचालन) राजेश कुमार, अन्य विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिकारी, यूनियन व एसोसिएशन के प्रतिनिधि, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के प्रभारी सहित बड़ी संख्या एनटीपीसी कर्मचारी व संविदा श्रमिक की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ प्रबंधक (सुरक्षा) राकेश साहू ने किया तथा अपर महाप्रबंधक (सुरक्षा) जितेन्द्र कुमार ने आभार व्यक्त किया।

....'यों' नहीं हो रही 'गौमाता' की 'पूजा', यों 'कु ो' नोंच 'रहे'?

तेजयुग न्यूज

बस्ती। किसान नेता और गौमाता की निरंतर सेवा और उसकी पूजा करने वाले चंद्रेष प्रताप सिंह, गौषालाओं में गौमाताओं की दुर्दषा देख काफी व्यथित है। कहते हैं, कि जिस गौमाता की पूजा हो रही है, उसे गौषाला में कुत्ते नोच रहे हैं, और इसके लिए गौर के प्रधान और सचिव के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई, चूंकि जिम्मेदार प्रधान ब्लॉक का प्रधान संघ का अध्यक्ष है, और ब्लॉक का कामकाज देखने और बीडीओ का चहेता है, इस लिए कार्रवाई नहीं हो रही है, कहा कि अगर इसी तरह अन्य प्रधानों को भी छूट कमलती रही तो हर गौषाला में गौमाताओं को कुत्तें नोंचते मिलेगे।

कहा कि यह कहावत प्रचलित है, कि पहले भारत में घी-दूध की नदियां बहती थीं। यानि भारत देश में इतना गोधन था कि प्रत्येक व्यक्ति को पीने को पर्याप्त मात्रा में शुद्ध दूध एवं खाने को शुद्ध घी मिल जाता था। हर घर में एक या अधिक गाय बंधी होती थीं। न आज जैसी बीमारियां थी न व्यक्ति साधारणतया बीमार होता था। गौधन की बहुतायत के कारण जैविक खेती होती थी। इन तमाम कारणों से पर्यावरण भी शुद्ध था। परंतु धीरे-धीरे व्यक्ति स्वार्थी एवं लालची होता गया। गाय को घर से बाहर निकाला जाने लगा एवं उसकी हत्या होने लगी। तेजी से गो-पशुओं की संख्या घटने लगी। स्थिति विषम होती गयी। दूध एवं घी की पूर्ति के लिए इसमें मिलावट की जाने लगी। जैविक कृषि की जगह रासायनिक खाद का प्रयोग किया जाने लगा। जिसका परिणाम हम देख रहे हैं, कैंसर जैसी भयानक बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं एवं हजारों व्यक्ति प्रतिदिन कैंसर जैसी बीमारियों से असमय ही मौत का शिकार हो रहे हैं। प्रत्येक दस व्यक्तियों में 7-8 प्रतिशत किसी न किसी बीमारी से पीड़ित हैं। भारत में गाय को माता का दर्जा दिया गया है। उसमें सैकड़ों देवी देवता निवास करते हैं, उसे पूजा जाता था। परंतु वही व्यक्ति इतना निर्दयी हो गया है कि उसी गौमाता को घर से निकाल कर उसे मरने को मजबूर कर रहा है।

कहा कि जब तक गाय दूध देती है, उसे स्वार्थवश पूरा एवं अच्छा आहार दिया जाता है, उसकी सेवा की जाती है। मगर, जैसे ही वही गाय दूध देना बंद कर देती है तो उसे आवारा छोडकर भटकने के लिए मजबूर किया जाता है। उसकी खोज खबर तक नही ली जाती है। बेचारी मूक वह गाय आंसू बहाती हुई दर-दर भटकती रहती है, एवं लोगों के पत्थर एवं लाठियां खाती है। आज तो स्थिति यह हो रही है कि गर्भवती गाय को भी छोड़ दिया जाता है तथा वह भटकती रहती है। जब वह गाय मालिक के घर से कहीं दूर बिहाय जाती है तथा उसके मालिक को उसके बिहाने का पता लगता है तो वह भागा-भागा हुआ जाता है एवं अपना अधिकार जताते हुए उस गाय बछड़े को घर लाता है। आज यह स्थिति प्रत्येक शहर ही नही अब तो गांवों में भी देखी जा सकती है। हर गांव गली में गाय तड़पते हुए मरती देखी जा सकती है। एक आवारा बेचारी भूखी गाय अपनी भूख शांत करने के लिए शहर गांव के कूड़े पर आकर वहां बिखरा हुआ कचरा, यहां तक पड़ी हुई प्लास्टिक की पन्नी भी खा जाती है जो उसकी आंतों को चीरकर तड़पते हुए मरने को मजबूर करता है।

एक गाय, व्यक्ति को दूध दही घी तो देती ही है। इसके अलावा उसका गोबर एवं मूत्र संपूर्ण मानव जाति के लिए बड़ा उपयोगी है, जो शुद्ध शाद एवं विभिन्न प्रकार की दवाईयां बनाने के काम आता है। गाय जीते जी तो यह सब देती है परंतु मरने के बाद उसकी खाल एवं हड्डियां भिन्न-भिन्न कार्यों में काम आती हैं। इस प्रकार गौमाता जिंदा रहते हुए तो मनुष्य का पालन करती ही है, मरने के बाद भी वह बहुत कुछ मनुष्य को देती है। परंतु स्वार्थी मनुष्य इसी गौमाता को अपने घर से निकालकर उसे आवारा भटकने एवं तड़पते हुए मरने के लिए मजबूर कर रहा है। सरकार ने गौ माताओं के लिए करोड़-करोड़ खर्च करके तमाम गौशालाओं का निर्माण कराया है, तथा उनके भोजन रखरखाव के लिए भी व्यवस्था की। लेकिन इस युग का लालची मानव गौमाता के भोजन को भी डाकार जा रहा है कहने का तात्पर्य यह है कि सरकार द्वारा गौ माता के रख रखाव भोजन का धन भी भ्रष्टाचार के भेंट चढ़ रहा है गौशालाओं में नित गौ माता भूख से मर रही है और उनके शरीर मांस को कुत्ते ग्रास बना रहे हैं। हिंदू धर्म में गाय को माता का दर्जा प्राप्त है, जन्म देने वाली मां के समान गौमाता को दर्जा दिया गया, कहते हैं कि गौ माता के रोम-रोम में अंग-अंग ईश्वर का देवताओं का वास है, फिर भी गौ माताओं की जो दशा गौ शालाओं में है, कहने लायक नहीं तिल तिल मरने को मजबूर हैं गौ माताएं।